यही है जो मैजिनी, यहां के ऋषि-मुनियों ने कहा था। दीनदयाल जी ने कहा कि हम विश्व के कल्याण की कामना करने वाले राष्ट्र के हैं। श्रेष्ठ भाव का पोषण करना ही पड़ेगा। हमने देखा कि अनुकूल बातें होती गई तो भारत का उत्थान हुआ। जब-जब इस चिति के प्रतिकूल वातावरण बनता गया तब-तब भारत का पतन हुआ है। इसलिए चिति का प्रतिकूलता, अनुकूलता का परिणाम भारत के उत्थान और पतन के साथ जुड़ा हुआ है। इसलिए चिति को जागृत रखने का भाव बनाए रखना है। इस चिति को समझकर, अपनी आत्मा को समझकर, अपनी इस भूमिका को समझकर जो समाज खड़ा होता है उसके लिए विराट शब्द का प्रयोग किया गया, इसलिए चिति और विराट को समझना होगा। हम अनुभव कर सकते हैं कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक चारों दिशाओं में अपना समाज है। उस समाज की कई प्रकार की मान्यताएं हैं। वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन, भाषा एक नहीं है। एकरूपता है तो जीवन मूल्यों को लेकर। भारत सांस्कृतिक दृष्टि से एक राष्ट्र है। इसी को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहते हैं। हम कहते हैं कि कभी अफगानिस्तान के गंधार से गांधारी आई थी। हम कहते हैं कि लंका में राम गए थे। वह लंका में युद्ध के लिए गए थे। यदि वह लंका को जीतने जाते तो अपना राज्य स्थापित करके आते। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कारण, लंका भी इसी भारत का हिस्सा है। राजनैतिक दृष्टि से पाकिस्तान, बांग्लादेश अलग हैं। लेकिन, सांस्कृतिक दृष्टि से पाकिस्तान के कल्चरल में हिस्ट्री आफ पाकिस्तान लिखनी पड़ी है। यह हमें गौरान्वित करता है।

आज भी तीर्थक्षेत्र का जब कोई नाम लेता है तो ननकाना साहिब का नाम आएगा। उनमें कराची के आस-पास रहने वाली हिंगलाज माता का नाम आएगा। बांग्लादेश के ढाकेश्वरी देवी का नाम आएगा। वहां के लोगों को अजमेर शरीफ दरगाह अपना लगता है। ज़्या यह खत्म हो सकता है। इस सांस्कृतिक बातों के आधार पर ही अखण्ड भारत की बात की जाती है। अखण्ड भारत की बात सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर की जाती है। इस चिति को समझकर, उसके मूलभाव को समझकर विराट शब्द को समझने की जरूरत है। इसके लिए हमें राजनैतिक राष्ट्रवाद की उपेक्षा करते हुए चलना पड़ेगा। कई बार मैं सोचता हूं कि भारत में इतने देवी-देवता होने के बाद भी भारत माता